तकदीर पर ईमान लाने का मतलब क्या हैं?

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

तकदीर पर ईमान लाने का मतलब इस बात को माना जाये कि दुनिया मे जो कुछ भी हो रहा है, अल्लाह के हुक्म से हो रहा है यहा सिर्फ उसी का हुक्म चलता है, ऐसा नही है कि वह तो कुछ और चाहता हो और दुनिया का कारखाना किसी और ढब पर चल रहा हो, हर भलाई और बुराई हिदायत व गुमराही का एक कानून है जिस को उसने पहले से बना दिया है. अल्लाह का शुक्र अदा करने वाले बन्दो पर जो मुसीबतें आती है जिन कठनायो का सामना करना पडता है और जो आजमाइशे उनपर आती है, ये सब हालात और उनके रब के हुक्म और पहले से तैय किये हुये कानून के मुताबिक है. [मुस्लिम; रावी उमर बिन खत्ताब रदी, रिवायत के एक हिस्से का खुलासा]

◆ अमल की तौफिक

अल्लाह के यहा ये बात तैय है की इन्सान अपने किन आमाल की वजह से दोजख का हकदार होगा और किन आमाल की वजह से जन्नत को जायेगा अल्लाह ने इस तकदीर को बडी तफसील से कुरान मे बयान किया है और रसूलुल्लाहﷺ ने भी अच्छी तरह से साफ कर दिया है अब ये इन्सान का अपना काम है की वो जहन्नम की रह पर चलना पसन्द करता है या जन्नत की राह पर, दोनो मे से एक को अपनाना ये उसकी जिम्मेदारी है और उसकी जिम्मेदारी इसलिये है की अल्लाह ने उसको इरादा की आजादी दी है और रास्ते को चुनने मे आजाद छोड दिया है यही आजादी उसको सजा दिलवायेगी और यही आजादी की वजह से जन्नत पायेगा, लेकिन बहुत से कम-अकल लोग अपनी जिम्मेदारी को अल्लाह के सीर डाल देते है, और अपने आपको मजबूर समजते है. [मुत्तफक अलैही, रावी अली रदी, रिवायत का खुलासा]

◆ तय की हुवी तकदीर

अबु खुजामा अपने बाप से रिवायत करते है कि उन्हों ने कहा, मेने रसूलुल्लाहﷺ से पूछा कि यह दुआ तावीज जिसे हम

अपनी बीमारियों के सिलसिले मे करते है और यह दवाये जो हम अपनी बीमारी को दूर करने के लिये इस्तेमाल करते है, और दुखों और मुसीबतों से बचने के लिये जो उपाय हम करते है, क्या यह अल्लाह की तकदीर को टाल सकती है? आप ने फरमाया यह सब चीजें भी तो अल्लाह की तकदीर मे से है. हुजूर के जवाब का खुलासा यह है कि जिस अल्लाह ने यह बीमारी हमारे लिये लिखी उसी अल्लाह ने यह भी तैय किया कि फला दवा से और फला तदबीर से दूर की जा सकती है, अल्लाह बीमारी का पैदा करने वाला भी है और उस को दूर करने वाली दवा का भी, सब कुछ उसके तेय किये हुये कायदे कानून के मुताबिक है. [तिर्मीजी; रावी अबू खुजामा, रिवायत का खुलासा]

◈ नफा नुक्सान का मालिक कौन?

इबने अब्बास रदी, फरमाते है कि एक दिन जबकि मे आपﷺ के पीछे सवारी पर बैठा था आप ने फरमाया, ऐ लडके मे तुझे कुछ बाते बताता हु (ध्यान से सुन) देख तू अल्लाह को याद रख तो अल्लाह तुझे याद रखेगा तू अल्लाह को याद रख तो अल्लाह को अपने सामने पायेगा, जब मांगे तो अल्लाह से मांग,

जब तू किसी मुश्किल मे मदद चाहे तो अल्लाह से मदद मांग, अल्लाह को अपना मदद करने वाला बना, और इस बात का यकीन कर कि लोग जमा होकर एक साथ तुझे कोई नफा पहुचाना चाहे तो वह तुझे नफा नहीं पहुचा सकते, सिवाये उसके जो अल्लाह ने तेरे लिये लिख दिया है (यानी किसी के पास देने को कुछ है ही नहीं कि देगा, सब कुछ तो अल्लाह का है, वह जितना देने का किसी के हक मे फैसला करता है उतना ही मिलता है चाहे जिस झरिये से मिले) और अगर लोग इकट्ठा हो कर तुझे कोई नुकसान पहुचाना चाहे तो वह कुछ भी नुकसान नहीं पहुचा सकते, सिवाये उसके जो अल्लाह ने तेरी किस्मत मे लिख दिया है. (तो फिर अल्लाह ही को अपना अकेला सहारा बनाना चाहिये). [मिश्कात इबने अब्बास रदी, रिवायत का खुलासा]

◆ अगर और मगर का चककर

एक तो वो मोमीन है हो जिस्मानी और फिकरी कुव्वत ज्यादा रखता हो तो जाहीर है जब वो अपनी सारी कुव्वत अल्लाह की राह मे खर्च करेगा तो दीन का काम उसके हाथो ज्यादा होगा

उस शख्स के मुकाबले मे जो कमजोर है जिस की सेहत खराब है, या फिकरी लिहाज से उंचा नही तो अल्लाह की राह मे वो भी अपनी कुव्वत को लगायेगा मगर उतना काम तो नही कर सकता जितना पेहला आदमी करता है, इसलिये उसे दुसरे के मुकाबले मे इनाम ज्यादा मिलना ही चाहिये, हा दोनो चुकी एक ही राह यानी अल्लाह की राह के मुसाफिर है इसलिये इस कमजोर मोमीन को थोडा काम करने की वजह से इनाम से मेहरूम ना किया जायेगा, असल मे ताकत रखने वाले मोमीन को ये बताना मकसद है की अपने ताकत की कदर करो, उसके जरिये जितना आगे बढ सकते हो बढो कमजोरी आ जाने के बाद आदमी करना भी चाहे तो नही कर पाता, मोमीन अपनी जहेन और उपाय वा कुव्वत को सहारा नही बनाता बल्की उसपर जब मुसीबत आती है तो उसका जेहन यू सोचता है की ये मुसीबत मेरे रब की तरफ से आई है, ये तो मेरे सुधार के कोर्स का एक हिस्सा है और इस तरह ये मुसीबत उसके भरोसे को बढाने का जरिया बन जाती है. [मिश्कात रावी अबू हुरैरा रदी, रिवायत का खुलासा]

आलाम ऐ रोजगार को आसान बना दिया,

जो गम हूंआ उसे गम ऐ जाना बना दिया.